जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५० वे ❖ अंक ६ वा ❖ फेब्रुवारी २०१९ ❖ वीर संवत २५४५ ❖ विक्रम संवत २०७५

या अंकात पान नं.

- वाचकांचे मनोगत..... १५
- जैन कॉन्फ्रेन्स - श्री. पारसजी मोदी शपथ विधी समारोह, अहमदनगर १९
- श्री. नेमिनाथ जैन ब्रह्मचर्याश्रम, चांदवड २१
- कव्हर तपशील २४
- ।। जिनेश्वरी ।। अध्याय ३३ : कर्म प्रकृती ३१
- सुखी जीवन की चाबियाँ - आठ दोष त्याग : इन्द्रिय जय ३७
- हम सच्चे हैं या नहीं? पहचाने! ४२
- चिन्तन के झरोखे से ४४
- मृत्यु दर्शन जरुरी है ४५
- विराट वागरणा ४९
- जीवन के विकास के लिए ५२
- तन के रथ को सुपथ पर बढाते चलें ५३
- कडवे प्रवचन ५५
- भरोसेमंद शाकाहार ५७
- तेज:पुंज आचार्य श्री चन्दनाजी म. ५९
- डायमंड डायरी ६१
- धर्माच्या कॉलममध्ये जैन लिहा ६३
- चलती रहे जिंदगी - हर करम अपना करेंगे..... ७३
- आनंद की आम्रडाली ७८
- एक छोटी सी बात ७९
- बदलांचे स्वरूप जाणून घेऊ या ८१
- जैन दर्शन - समय ८२
- जिनेका हक ८४
- इम्यूनिटी : रोग प्रतिरोधक क्षमता ८५
- रत्न संदेश ८७
- ऐसी हुई जब गुरुकृपा - ऐन्द्रिय सुखा रो त्याग कर ९१
- आचार्य श्री चन्दनाजी ९३
- अच्छा इन्सान बनने के १० सूत्र ९५
- सावधान! आय. पी. एल. येत आहे ९६

● आदिशक्ती फाऊंडेशन, पुणे	९९	● डॉ. जवाहर भळगट, पुणे-पुरस्कार	११७
● जैन सांस्कृतिक महोत्सव, नाशिक	१०१	● पी. एच. डायग्नोस्टीक, पुणे	११९
● स्व. चंद्रकांतजी छाजेड फाउंडेशन, पुणे	१०३	● जीवन को कैसे जियें ?	१२०
● तातेड रक्तदान शिबीर, निगडी	१०४	● हास्य जागृति	१२२
● किर्ती कार ॲक्सेसरीज, पुणे	१०५	● पतिव्रता लज्जायुक्त सोहती	१२३
● श्री. जैन श्वे. युवक महासंघ, पुणे	११३	● सौ. विमल बाफना, पुणे - अध्यक्षपदी	१२४
● युगल धर्म संघ, पुणे	११३	● आनंद तीर्थ चिचोंडी - वर्षीतप पारणे	१२५
● ॲड. बी.एल. छाजेड, पुणे - पुरस्कार	११७	● विविध धार्मिक व सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५०० रु.

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● www.jainjagruti.in
● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

● वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.

● आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA — Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 — IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ **मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in**
Email : jainjagruti1969@gmail.com ● Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ **भोसरी, चिंचवड, निगडी –** श्री. चांदमलजी लुंकड – फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- ❖ **पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी –** श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३०००००८१
- ❖ **गुरूवार पेठ, पुणे –** श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ **धनकवडी, पुणे –** श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५ / ९३७३६८२१३७
- ❖ **महावीर प्रतिष्ठान, पुणे –** निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ **सदाशिव पेठ परिसर, पुणे –** सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ **वडगाव शेरी, पुणे –** सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ **वडगाव मावळ, पुणे –** श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ **खडकी, पुणे –** श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ **औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव –** श्री. शिरिषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- ❖ **दापोडी, पुणे –** श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ **नांदेड सिटी, पुणे –** श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६ / ७२७२९७२९९९
- ❖ **दौंड, श्रीगोंदा –** श्री. रविंद्र चेनसुखलालजी गुगळे – ९८९०७२३४०२
- ❖ **अहमदनगर –** श्री. महेश एम. मुनोत– मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ **जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका –** श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी – मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ **सोनई –** श्री. मदनलालजी सी. भळगट – फोन : ०२४२७–२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- ❖ **औरंगाबाद –** श्री. सुभाषचंदजी मांडोत–फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ **मुंबई** खारघर– श्री. मदनलालजी गांधी–मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ **नाशिक –** श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३–२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- ❖ **नाशिक –** मनोज लखीचंदजी खिंवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ **गारगोटी** (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ **श्रीरामपूर –**श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ **बारामती–** डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२–२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- ❖ **अमळनेर, जि. जळगाव –** श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ **जळगाव –** श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ **धुळे –** श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ **शहादा, जि. नंदुरबार –** श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ **इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर –** श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ **मिरज, जि. सांगली –** श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ **कोल्हापूर –** सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१–२६९५४३३
- ❖ **सातारा व सातारा जिल्हा –** श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. – ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

॥ वाचकांचे मनोगत ॥
जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण...

जैन जागृति - गोल्डन ज्युबिली वर्षातील पहिला अंक, सप्टेंबर २०१८ पर्युषण अंका पासून वाचकांचे मनोगत 'जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण' या सदरात दरमहा आचार्य भगवंत, साधु-साध्वी महाराज, समाज बांधव यांचे आलेली पत्रे जैन जागृतित प्रकाशित केली जात आहेत. या सदरात प्रकाशित करण्यासाठी बरीच पत्रे, संदेश आमच्याकडे आली आहेत. यापैकी दरमहा काही पत्रे प्रकाशित केली जातील. सर्व पत्रे क्रमशः प्रसिध्द केले जातील. **- संपादक**

आचार्य श्री रत्नसेनसुरिश्वरजी म. सा. का जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद

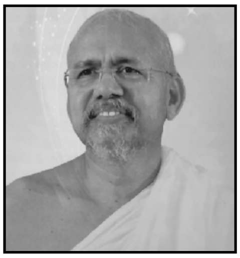

धर्मानुरागी संजयभाई ।
हार्दिक धर्मलाभ !

देव-गुरू कृपा से आनंद है । 'जैन जागृति' प्रतिमास मिलता है । श्वे. जैन संघ में कई हिन्दी मासिक, साप्ताहिक निकलते है । परंतु कइयों में तो सिर्फ सामाजिक समाचारों की ही बहुलता होती है। उनमें धार्मिकता नहीं होती है जब कि जैन-जागृति में प्रतिमास वैराग्य प्रेरक धार्मिक अध्यात्मिक व संस्कार पोषक लेख भी होते है जो समाज के नैतिक स्तर को ऊपर उठाने में खूब सहायक बनते है ।

जैन जागृति मासिक अपने प्रकाशन के ५० वे वर्ष में प्रवेश कर रहा है यह बहुत आनंददायी घटना है।

आपका मासिक प्रगतिके पथ पर खूब आगे बढ़े और समाज को सही दिशा बताने में सक्षम बने इसी शुभ कामना के साथ

- आचार्य रत्नसेनसुरिश्वरजी म.सा., (मैसुर) ●

युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषिजी म.सा. का जैन जागृति पत्रिका को आशिर्वाद

युवा उद्यमी श्री संजयजी
संपादक जैन जागृति
धर्मस्मरण !

दूरद्रष्टा, प्रबल पुरूषार्थी, अजात शत्रु, जैन दर्शन, परम्परा, एकता के प्रबल समर्थक श्री कांतिलालजी चोरडिया ने आज से पचास साल पहले 'जैन जागृति' पत्रिका प्रारंभ की । पत्रिका के विषय का चयन वैविध्यपूर्ण किया । परिवार के आबालवृद्ध सभी के लिए पठनीय प्रेरक विषयों का चयन यह पत्रिका का प्राणतत्व रहा । अत्यंत संघर्ष तथा प्रतिकूलताओं के बावजूद आपने इस पत्रिका को समग्र समाज में प्रतिष्ठा, पहचान प्रदान की ।

गाँव गाँव जाकर सदस्यता देकर समाज के सभी स्तर तक जैन जागृति को पहुँचाया, विशेषांक के माध्यम से अनेक अज्ञात तथ्यों की विस्तृत जानकारी पाठकों को दी । अनेक संतो महापुरूषों के संदेशों से आपने जन-जन को परिचित कराया । पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक समाचारों सूचनाओ का एक अधिकृत मंच यह पत्रिका बनी । जैन समाज में गतिमान अनेक उपक्रम इस पत्रिका के माध्यम से ही लोगों तक पहुँचे । जैन समाज में प्रचलित अनेक

कुरीतियों को आपने जन प्रबोधन के रूप में दूर करने का सार्थक प्रयास किया।

साम्प्रदायिक अभिनिवेश रहित जैन समाज से संबध्द विचारों समाचारों की बुलंद आवाज 'जैन जागृति' स्वर्णजयंती वर्ष के अवसर पर हार्दिक बधाई तथा मंगलकामना। संजयजी अपनी पैतृक विरासत को आगे बढाते रहे। आज टी.वी. तथा सोशल मिडीया के दौर में पत्रिका प्रकाशन एक चुनौती बन गया है। तथापि गुरूकृपा एवं माता-पिता के आशीर्वाद आपके साथ है। आपका पुरूषार्थ तथा उदारमना श्रेष्ठियों के सहयोग से आप हमेशा सफलता के पथ पर आगे बढे। स्वर्णजयंती वर्ष की तरह शताब्दि तक आप पहुँचे इन्ही मंगलभावनाओं के साथ पुन: धर्मस्मरण !

महेन्द्रऋषि -युवाचार्य, श्रमणसंघ (डूंगला, राजस्थान)

Best Jain Magazine

प्रिय महोदय श्री. संजयजी के चोरडिया,
महोदया सौ. सुनंदा एस. चोरडिया
जैन जागृति - पुणे

सप्रेम जयजिनेन्द्र। शुभाशीर्वाद ! दिपावली, नूतन संवर सुखी, आनंदी, समाधानी एवं ऐश्वर्य से भरा समृद्धिपूर्ण हो। आपको निरोगी आरोग्य शतायु मिले यही परमात्मासे प्रार्थना।

आपका दिपावली अंक सुंदर एवं सर्वांगिण माहितीपूर्ण तथा दिपावली महात्म्य की ''गुरू गौतमस्वामी १०० तथ्य, चरम तीर्थंकर भ. महावीर गणधर श्री गौतम स्वामिजी का चरित्र बहुतही प्रसंगपूर्ण बना.

सभी वाचकों की लाडली पत्रिका जैन जागृति ५० वे सुवर्ण वर्ष में पदार्पण कर रही है। हार्दीक अभिनंदन ढेरभर बधाईयाँ। आपका हमारा अंक ऐसे ही सुयश का मार्गक्रमण करते रहे। जनता जनार्दन को प्रबुद्ध करते हुए जैन धर्म की प्रभावना, लोक जागरण, समाज प्रबोधन इ. आपका सहकार्य अग्रेसर रहे। आपकी पत्रिका Best Jain Megazine पुरस्कारसे गौरवान्वित हुई। आपके प.पू. पिताजी श्री. कांतिलालजी ने लगाया हुआ पौधा आज वटवृक्ष हो गया है, यह देखकर आनंद होता है।

आपली प्रगति सदैव वृद्धिंगत होत रहावी किर्तींच्या यशोशिखरावर पताका फडकत रहात प्रभू चा संदेश सर्वांना पोहचवण्याच्या कार्याने आपण तीर्थंकर गोत्र बांधत आहात. धन्य आपण ! जैन समाजाला 'समाज रत्न' प्राप्त झाले.

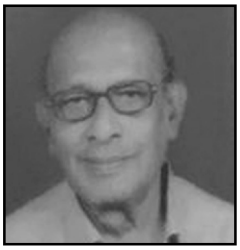

प्रेषक : मोहनलाल
जसराजजी कुमठ, नाशिक.
मो. ९७६७३०३५०१

जैन जागृति - पुण्याचे भूषण

जैन जागृति मासिकाचे ५० व्या वर्षात पदार्पण होत आहे ही बाब पुणे शहराचे दृष्टीने अत्यंत गौरवाची तसेच प्रशंसनीय. जैन जागृतिचे संपादक श्री संजयजी चोरडिया व सौ सुनंदाजी चोरडिया यांचे मन:पूर्वक अभिनंदन ! जैन जागृतिचा मी २० वर्षापासून वाचक असून सदरचा अंक हातात पडताच महिन्याभरात महाराष्ट्रातील तसेच भारतातील जैन समाजा संबधीत घडलेल्या घटनांची घर बसल्या सविस्तर माहिती उपलब्ध होते. तसेच साधु/साध्वींचे लेख वाचुन समाधान मिळते. जैन जागृति मासिकाची अशीच उत्तरोत्तर प्रगति होवो व पुढील वाटचाल शताब्दि अंकापर्यंत होवो ही सदिच्छा व हार्दीक शुभेच्छा.

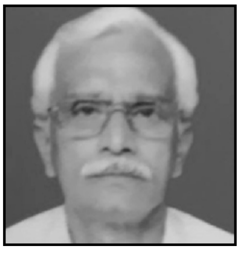

प्रेषक - चंद्रकांत
झुंबरलालजी बाबेल,
मुकूंदनगर, पुणे.
मो. ९०२८१२४४९९

ज्ञानाचा खजिना

सन २०१९ मध्ये जैन जागृति अंक ५० वर्ष पूर्ण करत आहे. म्हणजे अर्धशतक पूर्ण झाले आहे. खरेच! निरंतर हा अंक साधु-साध्वींचे लेख, वाचकांचे तसेच इतर लेखकांचे माहितीपूर्ण लेख प्रकाशित करत आहेत. भरपूर वाचनीय ज्ञानवर्धक ज्ञानाचा खजिना अंकात भरला आहे. वाचून समाधान वाटते. मी अठरा वर्षे जैन जागृतिची वाचक व लेखिका आहे. एक नंबर अंक, टॉप आहे. श्री. संजय चोरडिया यांचे करावे तेवढे कौतुक कमीच आहे. एवढे काटेकोरपणे शिस्तबद्ध हे मासिक प्रगति पथावर आणले आहे. धन्यवाद ! या अंकाची वरचेवर उंचच उंच भरारी होवो. ही अंतर्मनापासून शुभेच्छा !

✻ कलेकलेने वाढते चंद्रकोर
✻ बागेत नाचतो थुईथुई मोर
✻ जैन जागृति अंक आमचे चित्तचोर
✻ या शुभदिनी याच शुभेच्छा
✻ अंकाची प्रगती होवो वन्स मोर, वन्स मोर

प्रेषक : सौ. कल्पना
चांदमलजी बंब
वाल्हेकरवाडी, पुणे.
मो. ७७९८३८७७२९

बिना रुकावट चलना - चमत्कार है ।

सोशल मिडीया के इस वर्तमान युग का एक आश्चर्य ही है - ''जैन जागृति'' मासिक का ५० वे वर्ष में पदार्पण किसी संघ या संगठन की अनुपस्थिति में व्यक्तिगत तौरपर आदरणीय श्री. कांतीलालजी चोरडिया द्वारा प्रारंभ की यह पत्रिका इतने लम्बे अरसे तक बिना रुकावट चलना यह वास्तव में किसी चमत्कार से कम नहीं है । एक तरफ अनेकों लेखक / प्रकाशक परेशान है कि पाठक कम हो रहे है, पढने की रुची कम हो रही है और दूसरी तरफ यह है कि ''जैन जागृति'' जिसकी माँग निरंतर बढ रही है, प्रतिमाह पाठक गण आतुरता से इसकी प्रतिक्षा करते है । समयपर डाक गडबडी के कारण प्राप्त न होनेपर त्वरित दूसरी प्रत भेजने का अनुरोध होता है, यही निशानी है ''जैन जागृति'' के यशस्वीता की ।

और यह माँग क्यों है ? क्योंकि यह सिर्फ धार्मिक पत्रिका नहीं है, अनेक सामान्य जानकारियों से भरपूर यह पत्रिका सांप्रदायिकता से अछूता है । किसी भी संप्रदाय / गच्छ के संत सतियों के विचारों को, उनके कार्यक्रमों को अगर कहीं निश्चित रुपसे स्थान मिलता है, तो वह है ''जैन जागृति'' । चोरडिया परिवार के अनंत पुण्य का यह उदय है जो कि १४०-२०० पृष्ठ की पत्रिका प्रतिमाह सहजतासे प्रकाशित करने में समर्थ है।

इस पत्रिका को देश विदेश में पहुँचाने में चोरडिया परिवार का पुरुषार्थ-मेहनत और पुण्य ही काम कर रहा है । उनका यह पुरुषार्थ बढता रहे, पुण्य वृध्दिंगत होता रहे और ''जैन जागृति'' के माध्यम से जिनवाणी को जनजन तक पहुँचाने का कार्य निरंतर आगे बढता रहे यही शुभ भावना - मंगल कामना ।

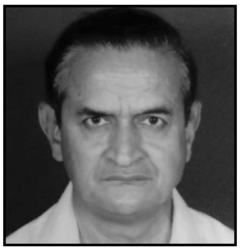

प्रेषक : विजय पटवा,
पुणे
मो. ९८५०१२७३०७

जैन समाजात सर्वांत जास्त खपाचे
व लोकप्रिय मासिक
जैन जागृति

जैन कॉन्फ्रेंस के कार्यकाल २०१८-२०२० की शपथ विधि समारोह – अहमदनगर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारसजी मोदी, राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन राष्ट्रीय महामंत्री श्री शशिकुमारजी 'पिन्टू' कर्नावट जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री विमलचंदजी जैन 'मुणोत व राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री सागरजी कुंदनमलजी साखला जैन आदि पदाधिकारीगण एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यगण मनोनीत

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस के नव-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारजी मोदी जैन एवं १४ प्रांतों से १४ प्रांतीय अध्यक्ष उनके प्रांतीय महामंत्री एवं प्रांतीय कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों का शपथ विधि समारोह मंगलवार, दिनांक १५ जनवरी २०१९ को राष्ट्रसंत, आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी म.सा. के समाधि स्थल आनंदधाम, अहमदनगर में महाराष्ट्र प्रवर्तक पू, श्री कुंदनऋषिजी म.सा. प्रबुद्ध विचारक पूज्य श्री आदर्शऋषिजी म.सा. एवं अन्य संत-सतियों के पावन सान्निध्य में हर्षोल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ । शपथ विधि समारोह के पूर्व नव-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारसजी मोदी जैन ने जैन कॉन्फ्रेंस वरिष्ठ पदाधिकारीगण एवं सहयोगियों के साथ राष्ट्रसंत प.पू. आचार्य सम्राट श्री आनंदऋषिजी म. सा. की समाधि स्थल पर नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया व दर्शन कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। देशभर से आये हुये हजारों दर्शनार्थियों का दिनभर आनंदधाम में ताँता लगा रहा ।

सर्वप्रथम समारोह की शुरूआत प्रबुद्ध विचारक पूज्य श्री आदर्शऋषिजी म.सा ने नवकार महामंत्र के जाप द्वारा की । इसके पश्चात् श्रीमती छायाजी पारसजी मोदी जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत कर कार्यक्रम की शुरूआत की ।

राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी श्री धरमचंदजी खाबिया जैन ने नव-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारसजी मोदी जैन को अपने पद के प्रति निष्ठा, कर्तव्य पालन की शपथ दिलवाई । राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का निर्वाचन घोषणा पत्र श्री पारसजी मोदी जैन को राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी एवं दोनों राष्ट्रीय सह-चुनाव अधिकारीयों द्वारा सौंपा गया ।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय श्री पारसजी मोदी जैन ने जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री पद पर युवा हृदय सम्राट श्री शशिकुमारजी 'पिन्टु' कर्नावट जैन एवं राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष पद पर श्री विमलचंदजी जैन 'मुणोत' तथा राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष पद पर श्री सागरजी कुंदनमलजी साखला जैन को मनोनीत करने की घोषणा की ।

पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आदि कई पदों का निर्वहन करने वाले तथा पिछले ३५ सालों से लगातार जैन कॉन्फ्रेंस को अपनी निरंतर सेवाएँ देने वाले आदरणीय श्रीमान् बालचंदजी खरवड़ जैन-मुंबई को राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष पद पर मनोनीत किया

नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारसजी मोदी

जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारा प्रथम कार्य गुरू भगवंतों की वैय्यावच्च सेवा को प्राथमिकता देना है, जिसके अंतर्गत संत-सतियों के साथ सेवा देने वाले सेवादार के वेतन की व्यवस्था करना, जो संत-सतीयाँजी विशेष पढ़ाई, ज्ञान अर्जन आदि करना चाहते है उनके लिए अध्यापक/अध्यापिका, स्वाध्यायी व पाठ्य सामग्री की व्यवस्था करना, पूजनीय वृद्ध एवं शारीरिक कठिनाईयों के कारण विहार नहीं कर पाने वाले संत-सतियों के स्थायी आवास की व्यवस्था करना आदि रहेगा । इसके अलावा बच्चों के लिए धार्मिक पाठशालाओं की व्यवस्था करना एवं विशेष रूप से स्वाध्याय को बढ़ाना देना हमारा लक्ष्य होगा ।

उन्होंने अपने सारगर्भित उद्बोधन में अपने पदाधिकारियों एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों का साथ लेकर नई आशा, नई दिशा व नए विश्वास के साथ कार्य करने का भरोसा दिलाया एवं अपनी इच्छा जाहिर की कि वे अपने वरिष्ठ पदाधिकारीयों के साथ विचार-विमर्श कर कई नवीन कार्यो की शुरूआत करेंगे तथा नया उज्ज्वल भविष्य निर्माण का कार्य करेंगे।

तत्पश्चात् नवगठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति के राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, सभी योजनाओं के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय मंत्री, १४ प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष एवं उनके द्वारा मनोनीत प्रांतीय महामंत्री/प्रांतीय कोषाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री, राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं सभी प्रांत के राष्ट्रीय कार्यकारीणी समिति सदस्यों का शपथ विधि का कार्यक्रम सुचारू रूप से पूर्ण हुआ । सभी ने एक नये; संकल्प व लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जैन कॉन्फ्रेंस को अपना संपूर्ण योगदान देने की शपथ ली । हर्ष-हर्ष व जय-जय के नारों के साथ पारस्पारिक बधाई व शुभ कामनाओं का आदान-प्रदान हुआ ।

शाम की ''गौतम प्रसादी की सुंदर व्यवस्था सौ. सविताजी रमेशजी फिरोदिया जैन परिवार'' की ओर से बहुत ही प्रशंसनीय रही । पहले दिन का भोजन एवं दूसरे दिन के सुबह का नाश्ता तथा दोपहर के भोजन की व्यवस्था ''गुरू आनंद भक्त मंडल-अहमदनगर'' ने लिया । संपूर्ण समारोह का सीधा प्रसारण १२५ देशों में पारस चैनल पर प्रदर्शित हुआ, जिसके लाभार्थी बनें ''जैन कॉन्फ्रेंस के युवा साथी श्रीमान् कमलेशजी भंवरलालजी नाहर जैन परिवार - अहमदाबाद ।'' इनका परिवार पिछले २५ वर्षो से जैन कॉन्फ्रेंस में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहा हैं । पारसजी मोदी जैन मित्र परिवार की ओर से सभी के सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद व अभिनंदन अर्पित किया गया । आचार्य भगवन् व युवाचार्यश्री जी के पावन सान्निध्य में ७ मई २०१९ के अक्षय-तृतीया पारणे के गौतम प्रसादी के लाभार्थी जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व ''राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्रीमान् शांतिलालजी दुग्गड़ जैन-नाशिक'' इनका जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा सम्मान किया गया ।

बुधवार दिनांक १६ जनवरी २०१९ को प्रात: जैन कॉन्फ्रेंस परिवार के सभी सदस्य चिचोंडी की ओर अग्रसर हुए । स्मरण रहे कि चिचोंडी आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषिजी म.सा. की जन्म भूमि हैं । उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. की प्रेरणा से नवनिर्मित 'आनंद तीर्थ' में नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप हुआ । उसके पश्चात् चिचोंडी में आनंद तीर्थ ट्रस्ट द्वारा सुंदर नाश्ते का आनंद लिया । जैन कॉन्फ्रेंस परिवार चिचोंडी गांव में आचार्य भगवन की जन्म स्थली पर दर्शनार्थ एकत्रित हुए और नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया । उसके पश्चात मिरी, जालना, औरंगाबाद, इत्यादि स्थानकों को भेट दि गई ।

इस समारोह को सफल बनाने के लिए श्री. विलासजी लोढ़ा जैन, श्री. सतीशजी (बाबूसेठ) लोढ़ा जैन, श्री. मनोजजी सेठिया जैन, श्री. रमेशजी बाफना जैन, श्री. सतीशजी चोपड़ा जैन आदि महानुभावों का सहयोग रहा । ●

कव्हर तपशील - फेब्रुवारी २०१९

❖ **जैन कॉन्फ्रेंन्स राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पारसजी मोदी**
श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंन्सचे नव-निर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. पारसजी मोदी जैन व अन्य १४ प्रांतांचे १४ प्रांतीय अध्यक्ष महामंत्री कोषाध्यक्ष राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिती सदस्य यांचा शपथ विधी समारोह १५ जानेवारी २०१९ रोजी अहमदनगर येथे भव्यकार्यक्रमात संपन्न झाला. साधु-साध्वी व हजारो श्रावक, श्राविका संपूर्ण भारतातून आले होते.

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. पारसजी मोदी व जैन कॉन्फ्रेंन्सचे पदाधिकारी यांनी १६ जानेवारी रोजी श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांची जन्मभूमी चिचोंडी येथील आनंद तीर्थला भेट दिली. यावेळी आनंद तीर्थचे ट्रस्टी श्री. सुभाषजी मुथा, श्री. रविंद्रजी नहार, श्री. सुनीलजी नहार, श्री. सुरेंद्रजी संचेती, कु. प्रार्थना संचेती, श्री. अजयजी भंडारी, श्री. अशोक पितळे, डॉ. विरेंद्र आसेवाल, श्री. विलासजी कटारिया व श्री. संजय चोरडिया, श्री. विजय समदडिया, श्री. लालचंदजी कर्नावट, श्री. अनील नहार यांनी श्री. पारसजी मोदी व सर्व पदाधिकारी यांचे स्वागत, सन्मान केले.

❖ **श्री. नेमिनाथ जैन ब्रह्मचर्याश्रम, चांदवड**
चांदवड येथील श्री. नेमिनाथ जैन ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरूकूल संस्थेत ६ जानेवारी रोजी विविध विभागाचे नामकरण, उद्‌घाटन व दानदाताचा सन्मान इ. कार्यक्रम संपन्न झाले. या कार्यक्रमास प्रमुख अतीथी म्हणून लोकमत समूहाचे श्री. राजेंद्रजी दर्डा, आमदार सुभाषजी झांबड, आमदार प्रशांतजी बंब, सी.बी.छाजेड मुंबई, विजयजी लोढा-मालेगाव लाभचंदजी कोठारी-जयपुर, इ. मान्यवर उपस्थित होते.

यावेळी संस्थेचे विश्वस्त मंडळाचे अध्यक्ष श्रीमान संपतलालजी सुराणा यांच्या ९१ व्या वाढदिवसानिमित्त व जीवनात सामाजिक, शैक्षणिक व धार्मिक कार्यात मोठे योगदान दिल्याबद्दल संस्थेतर्फे विशेष सन्मान करण्यात आला.

❖ **पी. एच. डायग्नोस्टीक सेंटर, पुणे**
पुणे - द टाईम्स ऑफ इंडिया ग्रुप तर्फे पी.एच.डायग्नोस्टीक सेंटरचे डॉ. हेमंत धोका यांना डायग्नोस्टीक सेवेत केलेल्या महत्वपूर्ण कार्याबद्दल आयकॉन्स ऑफ द हेल्थ पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले.

❖ **श्री. रमणलालजी लुंकड, पुणे - पुरस्कार**
पुणे येथील प्रसिद्ध बिल्डर्स, दानवीर, धार्मिक, सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. रमणलालजी लुंकड यांना जैन सांस्कृतिक महोत्सव, नाशिक संस्थे मार्फत ३१ डिसेंबर रोजी मानव सेवा पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले.

❖ **श्री. राजेंद्रजी बांठीया, पुणे - पुरस्कार**
पुणे येथील प्रसिद्ध उद्योजक व विविध धार्मिक सामाजिक संस्थेद्वारे भरीव सामाजिक धार्मिक कार्य करणारे श्री राजेंद्रजी मोहनलालजी बांठीया व सौ. सरिता बांठीया यांचा आदिशक्ती फाऊंडेशनच्या वतीने आऊसाहेब पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. मा. राज्यपाल श्रीनिवास पाटील, फाऊंडेशन अध्यक्ष श्री. दत्ता पवार यांच्या हस्ते पुरस्कार देण्यात आला.

❖ **डॉ. जवाहर भळगट, भोसरी - पुरस्कार**
महेशदादा स्पोर्टस फाऊंडेशन भोसरी द्वारा भोसरीच्या जडणघडणीमध्ये ज्या व्यक्तींनी महत्वाची भूमिका बजावली अशा विविध क्षेत्रातील ज्येष्ठ नागरिकांचा गौरव सोहळा आयोजित केला. यावेळी डॉ. जवाहर भळगट यांना भोसरीचे दिपस्तंभ हा पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले.

❖ **ॲड. बी.एल. छाजेड, पुणे - पुरस्कार**
पुणे येथील प्रसिद्ध वकील व वारकरी संप्रदायात केलेल्या कार्याबद्दल ॲड बी.एल.छाजेड यांना श्री वारकरी प्रबोधन महासमिती द्वारा ''वारकरी सेवा

भूषण पुरस्कार'' मुंबई येथे खासदार श्री. संजय राऊत यांच्या हस्ते देण्यात आला.

❖ **चि. देवांग अभय भुरट – पुरस्कार**
पुणे येथील श्री. अभय मोतीलालजी भुरट यांचे सुपुत्र चि. देवांग याला University of Southern, USA Loss Angels मध्ये Outstanding Scholar Student of the Year हा सन्मान मिळाला आहे. त्याने M.S. in Construction Management & Engineering ही पदवी दीड वर्षात प्रथम क्रमांकाने मिळविली आहे.

❖ **तातेड रक्तदान शिबीर – निगडी**
निगडी येथील उद्योजक व सामाजिक धार्मिक कार्यात अग्रेसर श्री. अशोकजी नेमीचंदजी तातेड हे गत १९ वर्षापासून आपल्या माता-पित्याच्या स्मरणार्थ भव्य रक्तदान शिबीराचे आयोजन करतात. यावर्षी रक्तदान शिबीराचे उद्घाटन सौ. शारदा चोरडिया यांच्या हस्ते श्री. अशोकजी - सौ. सुरेखा, श्री. सागर- सौ. एकता तातेड परिवार श्री. कांतीलालजी मुनोत, श्री. सुभाषजी ललवाणी, श्री. मदनलालजी कांकरिया इ. मान्यवरांच्या उपस्थित करण्यात आले.

❖ **स्व. श्री. चंद्रकांतजी छाजेड, फाऊंडेशन, पुणे**
माजी पर्यटन राज्यमंत्री स्व. ॲड. चंद्रकांतजी छाजेड यांच्या द्वितीय स्मृती दिना निमित्त छाजेड फौंडेशन द्वारा अनेक ठिकाणी रक्तदान शिबीर, अन्नदान, ब्लँकेट वाटप, हाडे तपासणी, औषध वाटप इ. कार्यक्रम घेण्यात आले. यावेळी गरजूंना मोफत औषध देताना निर्मलाताई चंद्रकांतजी छाजेड, मा. नगरसेवक श्री. आनंद छाजेड, श्री. राहुल छाजेड इ. छाजेड परिवार.

❖ **किर्ती कार ॲक्सेसरीज, पुणे**
पुणे येथील उद्योजक श्री. संजयजी काग यांच्या किर्तीकार ॲक्सेसरीज हे भव्य शोरूम २१ व्या वर्षात पदार्पण केले. अल्प काळात कार ॲक्सेसरीज मध्ये किर्तीकार ॲक्सेसरीजने आपले नाव लोकप्रिय केले आहे. ●

श्री. विशालजी सोलंकी – I.A.S. Commissioner (Education) Maharashtra State, Pune

पुणे - श्री विशालजी वसंतजी सोलंकी - I.A.S.ऑफीसर यांची Commissioner (Education) Maharashtra State, Pune येथे निवड झाली आहे.

श्री. विशालजी सोलंकी यांचे B.A. व M.A. हे शिक्षण पुण्यात झाल्यावर २००५ साली Indian Administrative Service Under Government of India मध्ये नेमणूक झाली. त्यांची Posting Sub Divisional Magistrate in Bishwanath Subdivision in Assam येथे झाली. याकाळात त्यांनी विविध पोस्टवर यशस्वी कार्य केले आहे व त्याबद्दल त्यांना विविध पारितोषिकांनी सन्मानीत करण्यात आले आहे.

नुकतीच त्यांची Commissioner (Education) Maharashtra State, Pune येथे पोस्टींग झाली आहे. हार्दिक अभिनंदन. ●

पूज्य गुरूदेवश्री राकेशभाई के प्रवचन पुणे में

- मार्च ८ – रात ७.३० से ९.३०
  स्थल : बालगंधर्व रंगमंदिर, पुणे
- मार्च ९ – रात ७.३० ते ९.३०
- मार्च १० – सुबह १०.०० से १२.००

दि. ९ व १० – अन्नाभाऊ साठे ऑडिटोरियम
पद्मावती, पुणे-सातारा रोड, पुणे
प्रवचन गुजराती में रहेंगे ।
संपर्क : जागृति फुरिया ७७१९९६१११५
www.srmd.org ●

तीर्थंकर प्रभु महावीरांचे अंतिम वचन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्रावर आधारीत

।। जिनेश्वरी ।।

प्रवचनकार : उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

भावानुवाद : साध्वी श्री ओजसदर्शनाजी म.सा., सौ. योगिता चंगेडे *(क्रमश:)*

अध्याय ३३ : कर्म – प्रकृती

'ज्यावेळी आत्मा कर्माची अधिनता नाकारते
'मी चाकर नाही, चालक आहे'
त्याचक्षणी तो कर्ममुक्त होऊ शकतो.'

कर्माचे मर्म

पदार्थात उर्जा आहे आणि आत्म्यातही शक्ती आहे. पदार्थात सामर्थ्य आहे आणि आत्म्यातही अनंत सामर्थ्य आहे. असं नाही की पदार्थात सामर्थ्य नाही किंवा आत्म्यात सामर्थ्य नाही, शक्ती, उर्जा, सामर्थ्य दोघांत आहे परंतु दोन्ही शक्तींचा सामर्थ्याचा सदुपयोग केला तर व्यक्ती तीर्थंकर बनते. दुरूपयोग केला तर कंस बनते आणि केवळ आत्मशक्तीचा सदुपयोग करणारी व्यक्ती सिद्धत्वास प्राप्त होते. दोन्ही शक्तींचा दुरूपयोग करणारी व्यक्ती स्वत:लाही दु:खी करते आणि समस्त विश्वाला दु:खी करते. प्रथमत: नीट समजुया कर्म आणि धर्माला.

धर्मात सामर्थ्य आहे की स्वत:ला आणि दुसऱ्याला सुख–शांती प्रदान करते. कर्माचे ही असेच होऊ शकते मग अडते कुठे ? काय आहे कर्माचे गणित? कसे आहे कर्माचे शास्त्र ? कर्म एक शक्ती आहे, कर्म उर्जा आहे. कर्म Vibration आहे, कर्म कंपन कर्म आहे, स्पंदन आहे, कर्म म्हणजे तरंग आहे, कर्म परमाणू आहे आणि या परमाणूची एक प्रकारची प्रकृती आहे, एक चरित्र आहे, हे जशा स्वरूपात ग्रहण केले जातात तशाच स्वरूपात फळ प्रदान करतात. परंतु कर्म आत्माधीन आहेत. आजपर्यंत आपण ऐकत आलो आहोत की जीव कर्माधीन आहे पण जरा नीट विचार करा जीव कर्माधीन नाही कर्म जीवाधीन आहेत. कारण जर जीव कर्माधीन असता तर आजपर्यंत कुणीही मुक्ती प्राप्त करू शकला नसता, कुणीही वीतरागी झाले नसते.

कर्माची अधीनता – देते दीनता

लक्षात घ्या – जीवाच्या अधीन कर्म आहेत. आत्म्याच्या अधीन कर्म आहेत. आत्मा कर्माची अधीनता स्वीकार करीत नाही कर्माची नोकरी नाकारतो, मी कर्माचा चाकर नव्हे चालक आहे हे मान्य करतो त्याच क्षणी तो कर्म मुक्त होऊ शकतो. पण आपणच त्याच्या बेडीत आनंद मानत आहोत तर ती बेडी तुटणार कशी? इतिहासाचे पान वाचाल तर लक्षात येईल आपली स्थिती. अफजलखान शिवाजीला पकडण्यासाठी, समाप्त करण्यासाठी चालुन आला होता. त्याने शिवाजीचे समस्त कूळ उद्ध्वस्त करण्याचा विडा उचलला होता. त्याला साथ देत होता, त्याला मार्गदर्शन करीत होता ब्राह्मण वकील. ज्यावेळी प्रतापगडाकडे अफजलखान जात होता रस्त्यात वाईच्या जंगलात पडाव टाकला होता. त्यावेळी ब्राह्मणाने अफजलखानाच्या सफलतेसाठी मोठे होमहवन केले होते. किती कटू सत्य आहे हे की आपल्या राजाच्या परायजयासाठी होम हवन..... ? पण भगवंत सांगतात.

आपली ही तशीच स्थिती आहे. आपला आत्मा आपला राजा आहे परंतु आपले मन, चेतना आपला आत्मा नव्हे तर आपले कर्म विजयी होवो यासाठी

प्रयत्नशील असतात. बहुतेक लोकांची अशीच अवस्था असते. त्यांतील थोडेफार महाभाग पराक्रम करतात, कर्मसत्तेला पराजीत करून आत्मराजाला विजयी बनवण्याचे. कर्माला निष्क्रीय निष्फळ बनविण्याची प्रक्रिया काय आहे ? कर्माचे गणित कसे आहे ? या कर्माचा संचालक समजावून घ्यावयास हवा. कर्माला बांधणारा कोण आहे ? त्या बंधनाला तोडणारा कोण आहे ? कर्माला विकसीत करणारे तत्व काय आहे ? या कर्माचा मालक कोण आहे ?

भगवंतांनी सांगितले आपणच मालक, आपणच संचालक आहोत. आपण ठरविले तर या कर्माचे पोषण बंद करून शोषण करू शकतो आणि पुढे त्यांचे शोधनही करू शकतो. आपली इच्छा असेल तर आपण यांना बांधू शकतो आणि तोडूही शकतो.

या अध्यायात हेच बघायचे आहे की कसे आपण बंधन तोडू शकतो कर्माचे. या अध्यायाची आराधना करतांना खूपच सोपी गोष्ट लक्षात ठेवायची आहे की ज्याक्षणी आपली चेतना, ज्या समयी आपला आत्मा स्वतःच्या भगवत् स्वरूपाला विसरून जातो, स्वतःच्या ईश्वरीय स्वरूपाचा विसर पडतो, स्वतःच्या दिव्यत्वाच्या अंशाचे विस्मरण होऊन जेव्हा आपण दीन-लाचार बनतो त्याच क्षणी आपण पदार्थाधीन, कर्माधीन होतो.

सव्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बद्धगं ।।

मग आपली चेतना गयावया करू लागते. तिची ही लाचार अवस्थाच बाह्य कर्माला आकर्षित करते आणि बाह्य कर्म जसजसे आकर्षित होतात ते आठ प्रकारानी शुद्ध आत्म्याला गढूळ करून ढवळून टाकतात. येणारी कर्मे ७ किंवा कधीतरी ८ प्रकारात आढळून येतात. बाहेरील कर्मे जशी आपल्याला चिकटतात ती आठ प्रकारात रूपांतरीत होतात. हे सर्व आपल्या केवळ कर्मामुळे-कृत्यामुळेच होते असे नाही, जेव्हा आपण काही मनाने भोग भोगतो तेव्हा कर्म बांधले जातात. जेव्हा बोलतो तेव्हा ही कर्म बंध होते जेव्हा बाहेर काही नाही पण आतल्या आत मनात केवळ दुष्टता असेल तेव्हा सुध्दा कर्मबंध होतो. दुष्टता कृतीत येवो अथवा न येवो पण दुष्टत्वाचे अस्तित्व आत असेल तर कर्म तुम्हाला चिकटल्याशिवाय राहणार नाही.

कर्माचे गणित

पदार्थ विज्ञानाचा नियम आहे की जसे तुमचे कंपन Vibration असेल तशीच कंपने तुम्ही ओढून घ्याल. जर तुमच्या आत मोहाचे स्पंदन चालू आहे तर बाहेरून मोहाचीच स्पंदने येतील. आतमध्ये श्रध्देची, भक्तीची कंपने असतील तर बाहेरून श्रद्धेचीच कंपने येतील. आत संशयाने साद दिली प्रतिसाद संशयाचाच मिळणार. अंतरात दुःखाचे परमाणु जन्मले तर बाहेरून दुःखच येणार. आतमध्ये शांतीचे परमाणु विकसित झाले तर बाहेरून शांतीचेच परमाणु येणार. असे कर्माचे गणितच आहे.

कर्माचे चरित्र असे आहे आणि चार प्रकारात ते विभागलेले आहे. हा कर्माचा स्वभाव आहे की कोणत्या कर्मपुद्गलाने कोणत्या प्रकारचे परिणाम घ्यावयाचे. कोणती अनूभुती घ्यावी. किती वेळ, कधी घ्यावी आणि कीती शक्तीने घ्यावी ? किती रसाची मात्रा असावी ? किती प्रमाणात असावी ? या संबंधी चार विभाग आहेत याला जैन ग्रंथात या शब्दांनी संबोधतात. १) प्रकृतिबंध २) स्थितिबंध ३) रसबंध ४) प्रदेशबंध म्हणजे स्वभाव, वेळ, मटेरियल, शक्ती हे सारे पुद्गलचे गुण आहे. आपण जेव्हा यांना आकर्षित करतो, ओढतो तेव्हा ते आपल्या आत्म्याला चिकटतात यालाच कर्मबंध असे म्हणतात.

कर्माचे गणित व यशस्वी प्रयोग

एक छोटेसे सूत्र सांगतो ते बघा. तुम्ही समजून घ्या की हा कर्माचा खेळ कसा खेळायचा ? खेळ खेळतांना खेळाचा आनंद घेतला पाहिजे मजा आली पाहिजे. लढायला जाल तर मराल, खेळायला जाल

तर आनंद प्राप्त कराल. कर्म जर आपल्याशी खेळ खेळत आहे तर आपल्यालाही कर्माशी खेळ खेळताच आला पाहिजे.

असे समजा की गेल्या जन्मातील असातावेदनीय कर्माचा उदय झाला आहे. आता असातावेदनीय, ज्ञानावरणीय कर्म, दर्शनावरणीय कर्म या सर्वांच्या स्थितीविषयी एक छोटेसे सूत्र भगवंतांनी दिले आहे की याची कमीत कमी स्थिती (वेळ) अंतर्मुहूर्ताची असते आणि जास्तीत जास्त स्थिती ३० कोडाक्रोडी सागरोपमाची असते. तर असातावेदनीय कर्माचा उदय जर अंतर्मुहूर्ताचा असेल तर कल्पना करा एक छोटेसे गणित मांडा की मागच्या जन्मातील असातावेदनीय कर्माचा उदय झाला तरी आता या जन्मात या वेळी मी सातावेदनीय कर्माचा बंध केला आणि करतेवेळी अंतर्मुहूर्ताचा बंध केला तर अंतर्मुहूर्तानंतर मी ज्या कर्माचा बंध केला त्याचे वेदन सुरू होईल आणि मग मागच्या जन्मातील असातावेदनीय कर्माचा निचरा होईल.

बस ! एवढचं केलं श्रीपाल आणि मैना सुंदरीन. जे साधु-संत महापुरूष असतात, जे स्वतंत्र दिव्य चेतनायुक्त असतात ते सर्वजण हेच करतात, या कर्मामध्ये ज्या उणीवा किंवा त्रुटी असतात त्या त्रुटींचाच उपयोग करतात. त्या कर्माचे मर्म ओळखून तसे आचरण करतात आणि मग मागील जन्मातील कर्मोदय झाला, कुष्ठरोगासारखी आपत्ती आली की लगेचच निरामय कर्माचा बंध करण्यास सुरूवात करतात. त्या निरामय कर्मबंधाची प्रक्रिया काय आहे? त्याचा विधी आहे पंचपरमेष्ठीचे स्मरण, ध्यान करा, तप करा, संयम पाळा, समर्पण करा त्यामुळे असातावेदनीय कर्माच्या जागी सातावेदनीय कर्माचा बंध होईल जसजसा सातावेदनीय कर्माचा बंध होत जाईल तसतसा असातावेदनीय कर्म समाप्त होत जाईल. वेदनेचा केवळ अंत नाही. तर वेदनेंचा क्षय होऊन जातो. मोहनीय कर्माचा उपशम होतो. अघाती कर्माचा उपशम होत नाही, घाती कर्मांचाच उपशम होतो. आघाती कर्माचा केवळ उदय क्षय होतो. वेदनीय कर्म आघाती कर्म आहे त्यामुळे त्याचा क्षय होतो. तो पूर्णपणे निघून जातो. उपशम होतो केवळ चार घाती कर्मांचा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अंतराय व मोहनीय कर्मांचा. यामध्ये उदय, उपशम, क्षयोपक्षम आणि अशी प्रक्रिया चालू असते आघाती कर्मांमध्ये केवळ उदय आणि क्षय या दोन प्रक्रिया चालतात आणि म्हणूनच याचा क्षय होताच सातावेदनीय कर्माचा उदय सुरू होतो.

कर्माला हरवावे कर्मानेच

आता व्यवहारातील उदाहरण बघा. डोकं दुखत आहे. मागच्या जन्मातील असातावेदनीय कर्माचा उदय झाला आहे मग काय करायचे ? सातावेदनीय अर्थात सुख, शांती, समाधीचा बंध करायचा. दुसऱ्याचे डोके दुखेल असे काम करू नये.

मागच्या जन्मातील अपयश नामकर्माचा उदय झाला तर आपण सांगीतलेले कुणी ऐकत नाही.लक्षात घ्या आपले बोलणे हे कुणी ऐकत नाही यासाठी ऐकणारा समोरचा कमी जबाबदार आहे आपण स्वत:च जास्त जबाबदार आहोत. कारण मागच्या जन्मातील आपल्या अनादेय नामकर्माचा उदय झाल्यावर मग आपले बोलणे कितीही चांगले, कितीही योग्य असले तरी समोरचा ऐकत नाही. आपण म्हणताना मी कितीही खरं सांगितलं तरी कुणी ऐकत नाही. खरे आहे ! तुम्ही खरं बोलत आहात पण तुमचा अनोदय नामकर्माचा उदय झाला आहे आणि अनोदय नामकर्माचा उदय झाला की मग तुम्ही खरं बोला अथवा खोटं समोरच्याला काहीही फरक पडत नाही. त्याला काहीही घेणदेण नसतं. कधी-कधी खोटी गोष्ट लोकांना पटते जर तुमचा आदेय नामकर्माचा उदय झाला असेल तर तुम्ही जगात बघत असाल की काही खरे शिक्केही खोटे ठरतात आणि काही खोटे शिक्के

ही चालून जातात, खपुन जातात आणि आपण विचार करत बसतो तो नकली असून पुढे गेला आणि हा अस्सल असुनही मागेच... ?

भगवंत याचे कारण सांगतात की त्याच्या आदेय नामकर्माचा उदय आहे आणि आपल्या अनादेय नामकर्माचा उदय आहे. मग अशावेळी काय करायचे? साधे गणित आहे अशावेळी ईश्वराच्या वचनांचा आदर करायचा म्हणजे आपल्या आदेय नामकर्माचा बंध होईल. स्वत:ची निंदा केली, दोष सांगितले तर आदेय नामकर्माचा बंध होईल, दुसऱ्याची निंदा केली आणि स्वत:ची प्रशंसा केली तर अनादेय नामकर्माचा बंध होतो.

जयवंत होण्यासाठी कर्मग्रंथ

शुभ नामकर्म आणि अशुभ नामकर्मांचा बंध कसा होतो यासाठी एक छोटे से सूत्र दिले आहे.

नामंकम्मं तु दुविहं, सुहमसुहं च आहियं
सुहस्य उ बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ।।

बंधुंनो ! स्वत:ची चूक कबूल करा आणि दुसऱ्यांचे चांगले गुण, चांगल्या गोष्टी कबूल करा. शुभनाम कर्माचा बंध होतो आणि दुसऱ्यांच्या चुकांचा दिंडोरा पिटला ''दुसऱ्याचं पहावं वाकून व आपलं ठेवावं झाकून'' असे केल्याने अशुभनामकर्माचा बंध होतो. म्हणून माझा आग्रह आहे की तुम्ही कर्मग्रंथ नीट समजून घ्यावा. जगतांना त्याचा प्रयोग-उपयोग करावा. जैन बंधूंना बघतो तेव्हा विचारही येतात आणि वेदनाही होतात की यांच्याजवळ हे कर्माचे सखोल शास्त्र-त्यावरील उपाय असतात हे लोक असे हातपाय गाळून का बसतात ? लाचारी का पत्करतात?

मला असे वाटते भिकाऱ्याच्या मुलाने भीक मागीतली तर त्याच्याविषयी करूणा-दया येईल त्याला मदत करण्याची भावना मनात येईल पण एखादा करोडपतीचा मुलगा, राजाचा राजकुमार जर भीक मागू लागला तर त्यावेळी तुमच्या मनात कोणती भावना जन्म घेईल ? खरं सांगा ! चीड येईल की राग येईल, काय होईल ? मग बंधुंनो, तुम्ही तीर्थंकराचे पुत्र म्हणजे सम्राटाचे पुत्र आहात. कर्माचा खेळ समजून घ्या. तुम्हाला जर कर्माचे गणित समजले तर कर्मावर विजय मिळविणे सोपे आहे. शत्रुला पराजीत करायचे असेल तर त्याची जमा बाजू आणि वजा बाजू दोन्ही जाणून घ्यावयास हव्या. शत्रुचे गीत गात बसला तर कधीच त्याला पराजीत करू शकणार नाही. तुम्ही जर तुमची मानसिकता ठरवली की कर्मभोग भोगावेच लागतात, आपण वाचू शकत नाही तर मग खरंच कर्माचा मार पडणारच आणि तुम्ही जर असा विचार केला की याची कमकुवत बाजू कोणती ती शोधून काढू. यात कोणता दोष आहे ? कमकुवत बाजू समजली की त्याला पराजीत अयशस्वी करू शकता.

भगवंतांनी कर्मसिद्धांताची प्ररूपणा यासाठी नाही केली की तुम्ही कर्मबंधनाचा स्विकार करावा यासाठी केली की कर्मबंधनाला तुम्ही तोडून टाकावे यासाठी ही प्ररूपणा केली आहे. भगवंतांनी प्ररूपणाच यासाठी केली की जनसामान्यांनी कर्माला समजून घ्यावे. कर्म तोडण्याचे शिकावे पण आपण तर ब्रीद वाक्य करून टाकले आहे. ''आपण बांधले आहे आता भोगावेच लागणार.''जरा नीट विचार करा भगवंतांनी देशना कर्म भोगण्यासाठी दिली की कर्मतोडण्यासाठी दिली आणि आम्ही हे सर्व वाचून सुद्धा स्वत:ला वाचवू शकत नाही. आपण असे कर्मभोगाचे रडगाणे गातांना आपल्याला मैना सुंदरी, अर्जुनमाली, चंडकौशिकाचे स्मरण का होत नाही ?

कर्म हा शत्रुच मानावा देव नाही

म्हणूनच या अध्यायाची आराधना करतांना हे आजीवन लक्षात ठेवा की कर्म तुमचा शत्रु आहे, कर्म तुमचा देव नाही. शत्रुला देवता मानाल तर काम अजून अवघड होउन जाईल. या उलट शत्रुची प्रकृति, त्याचा स्वभाव, त्याचे चरित्र समजून घ्या त्याच्याशी कसा

खेळ खेळला पाहिजे हे शिका-समजून घ्या.

उदाहरण बघा... कॉलरा हा एक संसर्गजन्य रोग आहे. जगात जितके रोग आहेत त्याबद्दल शास्त्रज्ञांची दृष्टी कशी असते ? ते काय करतात? ते त्या रोगाबद्दल सर्व माहिती गोळा करतात. त्यांची लक्षणे काय आहेत? कारणे काय आहेत ? कशामुळे होतो ? कशाप्रकारे टाळता येतो ? हे सर्व शोधून काढतात आणि मग त्या रोगाला निरोप देतात. नाहीतर पूर्वी लोक म्हणायचे हा दैवीप्रकोप आहे. त्याचा उपचार आता होऊ शकतच नाही. मग आता कसा काय त्यावर उपचार व्हायला लागला ? पूर्वी खोकला झाला की म्हणायचे शीतळा मातेचा कोप झाला. हे सर्व अज्ञानातून व्हायचे. चला या अज्ञानाला दूर करू आणि भगवंताच्या दिव्य वाणीला जीवनात सत्य करू, खरे करूया. खेळ, खेळ म्हणून खेळता आला तर सोपा-सहज आहे. खेळ, खेळता आला नाही तर मग.. अतिशय अवघड अहे. ज्याला पोहता येते त्याला पाण्यात राहणे, नदी पार करणे सोपे आहे. ज्याला पोहता येत नाही त्याला पाण्यात उतरणेच अवघड तर पार जाणे किती अवघड ? बंधूंनो ! चला भगवंताची ही दिव्यवाणी ऐकून आपण पार करणे, तरणे शिकुया, तोडणं शिकू-जगून जयवंत होणे शिकूया.

खेळ खेळावा कर्माचा

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय आणि वेदनीय कर्माविषयी आणि त्यांत विशेष वेदनीय कर्माविषयी समजून घ्या. समजा आपल्याला राग येतो, अहंकार ही जागृत होत आहे मागच्या जन्मातील कर्म उदयास आले आहे, मन भटकत आहे अशावेळी काय केले पाहिजे.

तर तुम्हाला दूसरे सूत्र सांगितले आहे की या वेदनीय कर्माचा न्यूनतम बंध किती वेळेचा आहे तर तो अंतर्मुहूर्ता इतका आहे. जेव्हा आपल्याला राग यायला सुरवात होते त्यावेळी जर आपण क्षमेची आराधना केली आणि क्षमेची आराधना करता-करता दूसरा पुण्यबंध केला तर काय होईल ? त्या कर्मबंधाची न्यूनतम वेळ पूर्ण झाल्यावर त्याचा उदय सुरू होईल आणि त्यावेळी रागाच निचरा-कचरा होईल.

दुसरा मुद्दा नामकर्माचा दोन्हीमध्ये किती अंतर आहे ? वेदनीय कर्मबंधाची स्थिती न्युनतम कमीत कमी अंतर्मुहूर्ताची आहे. अंतर्मुहूर्त म्हणजे ४८ मिनीटाहून कमी आणि नामकर्मबंधाचा न्यूनतम बंध आहे ८ मुहूर्ताचा म्हणजे कमीत कमी २ ते २:३० तासाचा काळ म्हणजे नामकर्माच्या प्रकृतीशी खेळ खेळायचा असेल तर अडीच तास तरी धैर्य ठेवावे लागणार. तेथे ४८ मिनीटात काही आपलं काम होणार नाही. भगवंतांनी प्रसारीत केले आहे की सातावेदनीय कर्माचा जघन्य बंध अंतर्मुहूर्ताचा होतो म्हणून कशाही प्रकारच्या असातावेदनीयचा उदय झाला असेल तरी मी त्यावेळी सातावेदनीयचा बंध करू शकतो आणि त्याचा बंध जघन्य होईल आणि जघन्य बंध पडला की अंतर्मुहूर्ता नंतर सातावेदनीय सुरू होईल. हा कर्माचा खेळ आहे.

कर्माची नॅनो टेक्नॉलॉजी

समजा, आपल्याला हवी तशी एखादी गोष्ट घडत नाही. खूप मेहनत आपण करतो पण त्याप्रमाणात मोबदला पाहिजे तसा मिळत नाही. अडचणी-अडथळे खूप येतात. अंतराय खूप येतात. आता अंतरायकर्माची कमीतकमी स्थिती अंतर्मुहूर्ताची आहे मग यावेळी मी दुसऱ्यांच्या अडचणी दूर केल्या, दुसऱ्यांना लाभ होत असेल तर आनंदाने होऊ दिला तर माझी अंतराय-अडचण दूर होईल. दूसऱ्याला आनंद दिला, प्रसन्नता दिली तर माझ्या अडचणी दूर व्हायला लागतात, लाभ अंतराय कर्माचा निचरा होण्यास सुरवात होते आणि लाभ होण्याचा अनुभव होऊ लागतो आणि अंतर्मुहूर्तात मला सुद्धा आनंद मिळणार. प्रॅक्टीकल करून बघा.

समजा आज तुम्ही नाराज, उदास आहात पण कोणी दु:खी, निराश होऊन तुमच्याजवळ आला तर तुम्ही त्याला खुश करा, आनंदी करा त्याचे नैराश्य आनंदात बदला आणि तुम्हाला जाणवेल की ''अरेच्या माझी सुद्धा उदासी कशी काय निघून गेली ?'' तुमचं दु:ख सुद्धा निघून जाईल कारण गणित आहे त्या मागे की अंतराय कर्माचा न्यूनतम बंध अंतर्मुहूर्ताचा आहे आणि आपण हा अंतर्मुहूर्ताचा खेळ खेळायचा आणि जीवनात जिंकायचंच याला नॅनो टेक्नॉलॉजी म्हणू शकता कर्माची.

समजा एखाद्यावेळी आपली बदनामी होत असेल, कुणाकडून जबरदस्त विरोध होऊन प्रचंड वादळ उठलं आहे म्हणजे अशावेळी आपल्या 'अपयश' नामकर्माचा उदय आहे. मग अशावेळी काय कराल ? कुणाची प्रशंसा करायला सुरवात करा, कुणाचे गुण कीर्तन करा, कुणाच्या चांगल्या गोष्टीची चर्चा करा, म्हणजे आपल्या यश नामकर्माचा बंध होतो म्हणून नवकार महामंत्र बोलायला सांगीतले जाते. लोगस्स, णमोत्थुणं म्हणायला सांगतात कारण ? कारण की हे बोलल्याने शुभ नामकर्माचा बंध होतो आणि शुभनामकर्माच्या बंधामुळे अशुभाचे गणित संपते. समजले ! असे हे कर्माचे गणित आहे.

कर्माला खेळ समजून खेळा, गंभीरतेने घेऊ नका जगणं सोपं होऊन जाईल. भगवंतांनी या अध्यायात कर्माचे गणित समजावले आहे. पुढील अध्यायात लेश्याचे वर्णन आहे. भगवंतांनी वर्णित केलेला एकही अध्याय असा नाही की ज्याचा जीवनात उपयोग करता येत नाही. एक अशी संपदा आपल्याजवळ आहे ज्याचा उपयोग करून आपण समाधी प्राप्त करू शकतो, अखंड आनंदाची प्राप्ती करू शकतो. त्या आनंदाची प्राप्ती आपणां सर्वास व्हावी ही मंगल भावना. (क्रमश:)●

जैन जागृति मासिक दरमहा ५ तारखेला पोस्ट केले जाते.

२५ तारखेपर्यंत अंकाची वाट पाहून मगच अंक न मिळाल्याबद्दल ऑफीसमध्ये फोन किंवा पत्रव्यवहार करावा.

जैन जागृति मासिकाला पोस्ट ऑफीसने दरमहा ५ तारखेला पुणे येथून पोस्ट करण्याची परवानगी दिलेली आहे. त्यामुळे पुणे येथून दरमहा ५ तारखेलाच जैन जागृति अंक सर्व ग्राहकांना पोस्ट केला जातो. पोस्टाच्या नियमाप्रमाणे अंक पोस्ट केल्याची ५ तारीख जैन जागृतिच्या कव्हर पान नं. ४ वर छापलेली आहे.

पोस्ट खाते रजिस्टर मासिकांना पोस्टेजमध्ये सवलत देते अंक पोस्ट केल्यानंतर ग्राहकांना अंक पुढील ५ ते २० दिवसात मिळतात. जैन जागृतिचे काही ग्राहक १/५/८/१०/१२/१५/२० इ. तारखेलाच जैन जागृति अंक न मिळण्यासंबंधी फोन करतात किंवा या संदर्भात पत्र देतात. तरी जैन जागृतिच्या सर्व ग्राहकांना विनंती आहे की त्यांनी २५ तारखेपर्यंत अंकाची वाट पाहून **पोस्टमनकडे चौकशी** करून मगच अंक न मिळाल्यास ऑफीसमध्ये फोन किंवा पत्रव्यवहार करावा.

विशेष टिप : २५ तारखेनंतर अंक न मिळाल्याबद्दल आलेल्या फोनला, पत्रांना दूसरा अंक ३० तारखेला पाठवला जाईल.

ग्राहकांनी जैन जागृति ऑफिसशी फोन व पत्र व्यवहार करतांना आपला ग्राहक क्रमांक कळवावा. आपल्या पत्त्यात काही बदल असल्यास तो बदल व आपला पिनकोड नंबर कळवावा व यासंदर्भात ऑफीसच्या फोनवरच फोन करावा.

ऑफीस फोन : ०२०-२४२१५५८३, (वेळ : सकाळी १० ते सायं. ६) **- संपादक**